बाढ़

देख लिया तेरा परिहास
अतीत ने किया निराश,
वर्तमान रहा उदास,
अब भविष्य ने बांधी आस ।।

साक्षी है विश्व इतिहास,
हुआ है सभ्यता का विनाश,
फसलों और मकानों का नाश,
प्रचण्ड रुप सर्जता सर्वनाश ।।

मनुष्य कितना विवश, बेबस,
प्रकृति सन्मुख, असहाय परवश।
फिर भी हरदम रही यह हसरत,
विपदायें घुटने टेकें बरबस ।।

चहुंतरफा हो हरयाली वास,
पर्वत बन जाये कैलाश।
क्षेत्रों को हो उत्तम निकास,
मैदानों पर हो बोध विकास ।।

संरचनात्मक तरीके पर डालो प्रकाश
सभी करें मिलकर प्रयास।
जन जन में जागा विश्वास,
नया बनेगा भारतवास ।।

परिवर्तन लायेगा नव प्रभात,
सफलतायें कभी दूर कभी पास।
देख लिया तेरा परिहास,
अब भविष्य ने बांधी आस ।।

राजेश्वर मेहरोत्रा, वैज्ञानिक "सी"